बिरहोर जनजाति के उत्थान में क्षेत्रीय राजनीतिक दलों की भूमिका : तोपचांची प्रखंड के चलकरी गाँव के विशेष सन्दर्भ में (वर्ष 2000 ई. से वर्तमान तक)

बिनोद बिहारी महतो कोयलांचल विश्वविद्यालय, धनबाद

के सामाजिक विज्ञान संकाय (राजनीति विज्ञान विभाग) में

पीएच.डी. की उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध–सार

द्वारा

शोधार्थी

आशा कुमारी

पंजीयन संख्या...

विश्वविद्यालय विभागः राजनीति विज्ञान (बि. बि. एम. के. यू. धनबाद)

शोध निर्देशिका

डॉ. मीना मालखंडी

सहायक प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष

राजनीति विज्ञान विभाग

गुरु नानक कॉलेज धनबाद

1. प्रस्तावना :–

झारखण्ड एक जनजातीय बहुल राज्य है। झारखण्ड राज्य में कुल 32 जनजातियाँ पायी जाती हैं जिसमें 8 जनजातियाँ ऐसी हैं जिन्हें अत्यंत पिछड़ी जनजाति या विशेष पिछड़ी जनजाति के रूप में घोषित किया गया है। वे जनजातियाँ हैं – बिरहोर, असुर, बिरजिया, परहिया, माल पहाड़िया, सबर, सौहरिया पहाड़िया, कोरबा। इन्हें झारखण्ड राज्य की आदिम जनजाति भी कहा जाता है। इन पिछड़ी जनजातियों में "बिरहोर" एक प्रमुख आदिम जनजाति है जो झारखण्ड राज्य के वन व पहाड़ी क्षेत्र में बसे हुए हैं। बिरहोर जनजाति झारखण्ड के हजारीबाग, बोकारो, धनबाद, रांची इत्यादि क्षेत्रों में पाये जाते हैं। अन्य जनजातियों की तुलना में इनकी आबादी अत्यंत कम है। ये बिरहोर जनजाति आधुनिक चकाचौंध से दूर एकांत, शांत और प्रकृति की गोद में रहने वाले लोग हैं। यह जनजाति सभ्यताओं के विकास के बावजूद आज भी बहुत पीछे है। आज यह जनजाति विलुप्त होने के कगार पर है या समाप्त होने के स्थिति में है। जो हमारे राज्य झारखण्ड के लिए चिंता का विषय है। आज हमारे राज्य के क्षेत्रीय राजनीतिक दल इनके संरक्षण की पहल कर रहे हैं ताकि उनको बचाया जा सके, इनके जीवन में सुधार किया जा सके। आज बिरहोर जनजाति के उत्थान का मुद्दा एक प्रमुख मुद्दा बन गया है। इसलिए इसे शोध का बिषय चुना गया है जो " तोपचांची प्रखंड के चलकरी गाँव के बिरहोर जनजाति के उत्थान में क्षेत्रीय राजनीतिक दलों की भूमिका" के सन्दर्भ में है।

तोपचांची प्रखंड के चलकरी गाँव के बिरहोर जनजातियों के उत्थान में क्षेत्रीय राजनीतिक दलों की अहम भूमिका रही है। इन क्षेत्रीय राजनीतिक दलों की भूमिका का ही परिणाम है कि आज वर्तमान समय में तोपचांची प्रखंड के चलकरी गाँव के बिरहोर जनजाति के लोग स्थायी जीवन जीने लगे हैं और पहले से अधिक जागरूक हुए हैं। आज इन्हें क्षेत्रीय राजनीतिक दलों की पहल से पानी, बिजली, स्कूल, इंदिरा आवास, पक्की सड़क, राशन कार्ड आदि सुविधाएँ दी गयी हैं। इसके साथ ही रस्सी बनाने का एक मशीन भी दिया गया है और वन प्रमंडल पदाधिकारी, धनबाद की ओर से इन्हें एक एकड़ जमींन भी दिया गया है । इन सुविधाओं के बावजूद यह जनजाति विकास के पथ पर बहुत पीछे है । इनके इस पिछड़ेपन का कारण वे खुद हैं ? या उनमे व्याप्त अंधविश्वास है ? या उनके रीति – रिवाज एवं परम्पराएं हैं ? जो उन्हें आगे बढ़ने नहीं देना चाहती है या सरकार एवं क्षेत्रीय राजनीतिक दलों की नीतियों एवं भूमिका में कोई कमी है ? प्रस्तावित शोध द्वारा इन सभी तथ्यों का विश्लेषण किया जाएगा ।

तोपचांची प्रखंड के चलकरी गाँव के क्षेत्रीय राजनीतिक दलों का विवरण या उल्लेख इस प्रकार है :–

- झारखण्ड मुक्ति मोर्चा (1980) – बिनोद बिहारी महतो
- झारखण्ड मुक्ति मोर्चा (1990) – बिनोद बिहारी महतो
- झारखण्ड मुक्ति मोर्चा (1995) – डॉ. सबा अहमद
- झारखण्ड मुक्ति मोर्चा (2005) – मथुरा प्रसाद महतो
- झारखण्ड मुक्ति मोर्चा (2009) – मथुरा प्रसाद महतो
- झारखण्ड मुक्ति मोर्चा (2019 से अब तक) – मथुरा प्रसाद महतो

2. साहित्य की समीक्षा :–

बिरहोर जनजाति के सम्बन्ध में पूर्व में कई विद्वानों या शोधार्थियों ने समय–समय पर अपने शोध द्वारा अध्ययन प्रस्तुत किया है जो इस प्रकार है :–

- रॉय (1925) ऐसे पहले व्यक्ति थे जिन्होंने सबसे पहले छोटानागपुर की जनजाति का अध्ययन कर बिरहोर जनजाति से सम्बंधित एक सम्पूर्ण प्रबंध "द बिरहोर – ए लिटिल नोन जंगल ट्राइबल ऑफ छोटानागपुर" प्रस्तुत किया था । अपने इस अध्ययन में उन्होंने बिरहोर जनजाति के कृषि, व्यवसाय, विवाह, गोत्र, टोटम, जनंगिकी, वनोपज संग्रहण आदि का संक्षिप्त अध्ययन किया है ।

- सिंह (2016) ने अपनी पुस्तक "बिरहोर महिलायें और बदलता परिवेश" में बिरहोर महिलाओं के आर्थिक , सामाजिक, राजनीतिक , सांस्कृतिक , धार्मिक जीवन में उनके बदलते परिवेश का समाजशास्त्रीय अध्ययन प्रस्तुत किया है ।

- रसैल एवं हीरालाल (1975) ने अपने अध्ययन में बिरहोर जनजाति की उत्पत्ति, निवास क्षेत्र, जीवन शैली, खान – पान, परम्परागत उत्पादन, शिकार जिसमे प्रमुख रूप से बन्दर का शिकार, नातेदारी, उपजाति का अध्ययन किया है ।

• <u>प्रमाणिक</u> (2019) ने अपनी पुस्तक "झारखण्ड की बिरहोर जनजाति एवं उनकी विलुप्ता की समस्या" में इस जनजाति के विलुप्ता की समस्या के कारणों एवं उसके निवारण के उपायों को रेखांकित किया है ।

• <u>सिन्हा</u> (2006) ने अपनी पुस्तक " छत्तीसगढ़ की आदिम जनजातियाँ " में बिरहोर जनजाति का अध्ययन प्रस्तुत किया है । उन्होंने इस जनजाति के रहन – सहन, जीवन – शैली, शिकार, पेशा, आर्थिक – स्थिति आदि आधार पर अपना अध्ययन प्रस्तुत किया।

• <u>कुजूर</u> (2018) ने अपनी पुस्तक " बिरहोर जनजाति में शिक्षा दशा एवं दिशाएँ " में इस जनजाति में शिक्षा के अभाव एवं शिक्षा के निम्न स्तर के कारणों का उल्लेख करते हुए शिक्षा के महत्व को दर्शाने का प्रयास किया है ।

• <u>शर्मा</u> (2022) ने अपनी पुस्तक " झारखण्ड की आदिम जनजातियाँ " में बिरहोर जनजाति के रीति – रिवाज परम्पराओं एवं सांस्कृतिक जीवन के साथ – साथ इसके सामाजिक एवं आर्थिक जीवन का भी अध्ययन किया है ।

• सहाय (2022) ने अपनी पुस्तक "आदिम बिरहोर छोटानागपुर का एक लगभग अनजाना जंगली कबीला" में इस जनजाति के सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक जीवन की गतिविधियों का उल्लेख किया है ।

3. <u>शोध अंतराल / शोध समस्या</u> :–

बिरहोर जनजाति के साहित्य समीक्षा से यह ज्ञात होता है कि पूर्व में बिरहोर जनजाति पर भी शोध हो चुका है, लेकिन कम हुआ है । पूर्व में हुए शोध में बिरहोर जनजाति के ऐतिहासिक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, धार्मिक जीवन शैली पर अधिकांश अध्ययन किया गया है । साथ ही इनकी समस्याओं एवं सुविधाओं पर भी शोध कार्य हो चुका है । लेकिन बिरहोर जनजाति के उत्थान में क्षेत्रीय राजनीतिक दलों की जो भूमिका रही है, उस पर अब तक शोध कार्य नहीं किया गया है । इसलिए इसे शोध अन्तराल के रूप में या शोध समस्या के रूप में शोध कार्य का विषय चुना गया है ।

4. <u>प्रस्तावित शोध कार्य का उद्देश्य</u> :–

• बिरहोर जनजाति के उत्थान के लिए क्षेत्रीय राजनीतिक दलों द्वारा किये गए कार्यों का मूल्यांकन करना ।

• बिरहोर जनजाति के उत्थान के मार्ग में आने वाली बाधाओं या रुकावटों पता लगाना ।

• बिरहोर जनजातियों के पिछड़ेपन के कारणों का पता लगाना ।

• क्षेत्रीय राजनीतिक दलों के प्रति बिरहोर जनजाति के दृष्टिकोण का विश्लेषण करना।

• इस जनजाति के लोगों के राजनीति के प्रति रूचि और सक्रियता का मूल्यांकन करना।

5. <u>परिकल्पना</u> :–

➢ चलकरी गाँव के बिरहोर जनजातियों के उत्थान में क्षेत्रीय राजनीतिक दलों की अहम भूमिका रही है ।

➢ बिरहोर जनजातियों के जीवन को समाज की मुख्यधारा से जोड़ने में क्षेत्रीय राजनीतिक दल निरंतर प्रयत्नशील रहे हैं ।

➢ बिरहोर जनजाति अब स्थायी जीवन जीने लगे हैं जिसमें क्षेत्रीय राजनीतिक दलों की अहम् भूमिका है ।

➢ वैश्वीकरण के युग में इनका पिछड़ापन एवं इनकी विलुप्ता की समस्या क्षेत्रीय राजनीतिक दलों के लिए चिंतन का विषय रहा है ।

➢ बिरहोर जनजाति में व्याप्त अन्धविश्वास , रीति – रिवाज एवं परम्पराएँ , अशिक्षा जैसी अनेक समस्याएँ इनके उत्थान के मार्ग में बाधक रहे हैं ।

6. <u>शोध विधि</u> :–

प्रस्तावित शोध क्षेत्र कार्य पर आधारित है । इसलिए शोध से सम्बंधित प्राथमिक आंकड़ों को संकलन करने की विधियों द्वारा प्राथमिक आंकड़े एकत्रित करने का प्रयास किया जाएगा। साथ ही ऐतिहासिक, वर्णात्मक एवं विश्लेषणात्मक पद्धति का उपयोग किया जाएगा ।

<u>प्राथमिक आंकड़ो को संकलन करने की विधियाँ</u> :–

• प्रत्यक्ष व्यक्तिगत अनुसंधान विधि

• अप्रत्यक्ष व्यक्तिगत अनुसंधान विधि

• स्थानीय स्रोत या संवाददाताओ से सुचना प्राप्त विधि

इन विधियों के अंतर्गत साक्षात्कार, प्रश्नावली, अनुसूची, अवलोकन, निदर्शन प्रणाली सर्वे द्वारा प्राथमिक तथ्य एकत्रित करने का प्रयास किया जाएगा ।

7. <u>शोध डिजाइन</u> :–

प्रस्तुत शोध कार्य मात्रात्मक एवं गुणात्मक शोध डिजाइन द्वारा पूर्ण किया जाएगा। जिसमें मुख्य रूप से खोजपूर्ण , वर्णनात्मक , नैदानिक एवं व्याख्यात्मक शोध डिजाइन अपनाया जाएगा।

- गुणात्मक शोध :– फोकस समूह , गहन साक्षात्कार , दस्तावेज की समीक्षा आदि पर आधारित होगा ।
- मात्रात्मक शोध :– सर्वेक्षण , संरचनात्मक साक्षात्कार , प्रेक्षण , रिकॉर्ड्स और रिपोर्टों की समीक्षा आदि पर आधारित होगा ।

8. <u>आंकड़ों के संग्रह और विश्लेषण के उपकरण</u> :–

प्रस्तुत शोध क्षेत्र कार्य पर आधारित है । इसलिए प्राथमिक आंकड़ों का संग्रह एवं विश्लेषण किया जायेगा । साथ ही आवश्कतानुसार द्वितीयक आंकड़ों का भी संकलन किया जाएगा। जो इस प्रकार है –

- <u>प्राथमिक स्रोत एवं उपकरण</u> :– इसके अंतर्गत साक्षात्कार प्रश्नावली , अनुसूची , अवलोकन ,निर्देशन प्रणाली , सर्वे द्वारा प्राथमिक तथ्य संकलन करने का प्रयास किया जाएगा ।
- <u>द्वितीयक स्रोत एवं उपकरण</u> :– शोध से संबंधित द्वितीयक आंकड़ो को प्राप्त करने के लिए कुछ पुस्तकों का अध्ययन किया जाएगा । साथ ही मासिक पत्र पत्रिका , समाचार पत्र , बेवसाइट एवं लिंक शोध प्रबंध , शोध आलेख आदि का भी अध्ययन किया जाएगा ।

9. <u>प्रस्तावित शोध कार्य का महत्व</u> :–

बिरहोर जनजाति हमारे राज्य झारखण्ड की एक विशेष पिछड़ी जनजाति है । इस जनजाति के विकास हेतु केंद्र एवं राज्य सरकार निरंतर प्रयत्नशील रही है। इसके बाद भी बिरहोर जनजाति आज भी अत्यंत पिछड़ी हुई है एवं विलुप्त होने की स्थिति में है। जो हमारे राज्य के लिए चिंता

का विषय है । इसलिए इससे संबंधित शोध करना अत्यंत आवश्यक है, जो आज के राजनीतिक पहलु का एक प्रासंगिक मुद्दा है और आने वाले समय मे भी प्रासंगिक रह सकता है।

बिरहोर जनजाति के उत्थान का मुद्दा एक क्षेत्रीय मुद्दा है और हमारे राज्य झारखण्ड में क्षेत्रीय मुद्दें एवं समस्यायें ही अहम होते हैं , जिसके समाधान एवं निवारण में क्षेत्रीय राजनीतिक दलों की अहम भूमिका होती है । ये क्षेत्रीय दल न सिर्फ देश एवं सरकार का ध्यान पिछड़ी जनजातियों की ओर आकर्षित करती है , बल्कि सरकार की योजनओं को इन पिछड़ी जनजातियों तक पहुँचाने में इनकी महत्वपूर्ण भूमिका होती है । उपरोक्त कथन प्रस्तुत शोध कार्य के महत्त्व को स्पष्ट करती है ।

प्रस्तुत शोध द्वारा यह भी ज्ञात होगा कि क्षेत्रीय राजनीतिक दलों द्वारा बिरहोर जनजाति को कौन – कौन सी सरकारी योजनाओं का लाभ मिला है । वे अपने अधिकारों के प्रति कितने जागरूक है तथा उनमें विकास का स्तर कैसा है ? बिरहोर जनजाति के उत्थान में क्षेत्रीय राजनीतिक दलों की भूमिका कैसी रही है ? इन सभी तथ्यों को शोध द्वारा उजागर किया जाएगा। जो शोध के महत्व को दर्शाती है ।

10. शोध की सीमाएं एवं भविष्य के कार्य :–

प्रस्तुत शोध कार्य को चलकरी गाँव में बसे बिरहोर जनजाति एवं उस गाँव में सक्रिय क्षेत्रीय राजनीतिक दल तक ही सीमित किया गया है। ताकि शोध करते समय विश्वसनीय एवं वैध आँकड़े प्राप्त हो सके और एक सीमा में रहकर शोध किया जा सके । फिर भी शोध कार्य करते समय बिरहोर जनजाति की भाषा को समझने में कठिनाई हो सकती है जिससे शोध कार्य प्रभावित हो सकता है।

भविष्य के कार्य :– प्रस्तुत शोध कार्य भविष्य में बिरहोर जनजाति के उत्थान की दिशा में एक उल्लेखनीय कार्य साबित होगा । बिरहोर जनजाति की स्थिति में परिवर्तन एवं सुधार होगा, उनमें जागरूकता आएगी और वे क्षेत्रीय राजनीतिक दलों के सहयोग से अपने जीवन को समाज की मुख्यधारा से जोड़ने में सफल होगें । इस प्रकार भविष्य में उनके सामाजिक , आर्थिक एवं राजनीतिक जीवन में क्षेत्रीय राजनीतिक दलों के सहयोग से उत्थान होगा ।

11. संभावित अध्यायीकरण :–

- प्रस्तावना

अध्याय (1) – बिरहोर जनजाति पर एक अवलोकन ।

अध्याय (2) – बिरहोर जनजाति की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि ।

अध्याय (3) – बिरहोर जनजाति के पिछड़ेपन के कारण एवं उनकी विलुप्तता की समस्या।

अध्याय (4) – बिरहोर जनजाति पर वैश्वीकरण एवं ईसाई मिशनरियों का प्रभाव चलकरी गाँव के सन्दर्भ में।

अध्याय (5) – बिरहोर जनजाति के उत्थान में क्षेत्रीय राजनीतिक दलों की भूमिका का मूल्यांकन एवं विश्लेषण चलकरी गाँव के सन्दर्भ में।

- निष्कर्ष

12. ग्रन्थ सूची :–

1. अग्रवाल, जी. के. (2020). जनजातीय समाज का समाजशास्त्र. आगरा : साहित्य भवन प्रकाशन.

2. दोषी, एस. एल. एवं जैन, पी. सी. (2020). जनजातीय समाजशास्त्र. नई दिल्ली : रैवत प्रकाशन.

3. हसनैन, एन. (2004). जनजातीय भारत. नई दिल्ली : जवाहर प्रकाशन.

4. कुजूर, एन. (2018). बिरहोर जनजाति में शिक्षा दशा एवं दिशाएं. रायपुरः आयु प्रकाशन.

5. मजुमदार , डी. ए. और मदन, टी. एन. (2018). सामाजिक मानवशास्त्र परिचय. दिल्ली : मयूर प्रकाशन.

6. प्रमाणिक, एस. (2019). झारखण्ड की बिरहोर जनजाति एवं उनकी विलुप्तता की समस्या. इंडिया : सत्यम पब्लिशिंग हाउस.

7. रॉय, एस. सी. (1925). द बिरहोर ए लिटिल नोन जंगल ट्राइब्स ऑफ छोटानागपुर . राँची : मैन इन इंडिया.

8. रसैल, आर. वी. और लाल. एच. (1975). ट्राइब्स एंड कास्ट्स ऑफ द सेंट्रल प्रोविन्सेस ऑफ लन्दन **VOl-1**.

9. सिन्हा, ए. के. (2006). छत्तीसगढ़ की आदिम जनजातियाँ . छत्तीसगढ़ : नॉरथन बुक सेंटर.

10. सिंह, ए. (2016). बिरहोर महिलायें और बदलता परिवेश . भोपाल : मध्यप्रदेश हिंदी ग्रथ अकादमी.

11.शर्मा , बी. सी. (2022) . झारखण्ड की आदिम जनजातियाँ (द्वितीय संस्करण). राँची : झारखण्ड झरोखा.

12. सहाय, आर. आर. (2022). आदिम बिरहोर छोटानागपुर का एक लगभग अनजाना जंगली कबीला. राँची : क्राउन प्रकाशन.

13. विद्यार्थी , एल. पी. और राय, बी. के. (1985). द ट्राइबल कल्चर ऑफ इंडिया. नई दिल्ली : कॉन्सेप्ट प्रकाशन.

14. वैष्णव, टी. के. (2007). बिरहोर आदिम जनजाति का आधारभूत सर्वेक्षण. रायपुर : अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान.